दवा उद्योग की भावी सम्भावनाएं

अमरनाथ मैत्र

वास्तविकता यह है कि पिछले बीस वर्षों में दुनिया में कहीं भी किसी सर्वथा नवीन औषधि रसायन की खोज नहीं हुई है। विश्व स्तर पर अनुसंधान की स्थिति देखें तो पता चलता है कि आजकल औषधि को शरीर में पहुंचाने की विधियों पर बहुत शोध हो रहा है। शरीर में दवा को पहुंचाना यानी ड्रग डिलीवरी शोध का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिस पर भारतीय दवा उद्योग ने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है....

भारत में सॉफ्टवेयर के अलावा दवा उद्योग ही एक क्षेत्र है जो 15 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ रहा है। यह वृद्धि दर विश्व में सर्वाधिक दरों में गिनी जा सकती है। भारत के दवा बाज़ार का मूल्य 3.1 अरब डॉलर आंका गया है जो विकासशील देशों में सबसे विशाल है। इसमें 15-18 प्रतिशत की सालाना वृद्धि की उम्मीद है। यह वृद्धि दर विश्व में दवा उद्योग की वृद्धि दर से दुगनी होगी। आश्चर्य की बात यह है कि भारत में प्रति व्यक्ति दवा की वार्षिक खपत मात्र 125 रुपए है जो कि दुनिया में न्यूनतम में गिनी जाएगी।

अब दवा उद्योग में पेटेन्ट की नई प्रणाली - उत्पाद पेटेन्ट - लागू होने जा रही है। इसकी वजह से दवा उद्योग का पूरा नज़ारा बदल जाएगा। यह परिवर्तन व्यापार सम्बंधी बौद्धिक सम्पत्ति अधिकार (ट्रिप्स) समझौते के तहत आने वाला है। इस परिवर्तन का नतीजा यह होगा कि भारतीय दवा उद्योग को अनुसंधान व विकास कार्य पर अधिक राशि खर्च करनी होगी और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार की प्रतिस्पर्धा में उतरना होगा। विश्व स्तर पर देखें, तो दवा उद्योग अपनी आमदनी का 15-20 प्रतिशत शोध कार्य पर खर्च करता है जबकि भारतीय दवा उद्योग मात्र 1.8 प्रतिशत ही शोध पर खर्च करता है।

औषधि के विकास सम्बंधी अनुसंधान के प्रायः दो पहलू होते हैं - (1) किसी नए औषधि रसायन की खोज और (2) ऐसे औषधि मिश्रण का निर्माण जिसका औषधिय गुण ज़्यादा हो। औषधि मिश्रणों का एक फायदा यह भी होता है कि इससे साइड प्रभाव कम हो जाते हैं। हाल ही में करंट साइन्स पत्रिका के एक सम्पादकीय में ज़िक्र था कि एक नई औषधि के विकास में लगभग 2000 करोड़ रुपए खर्च होते हैं। वास्तविकता यह है कि पिछले बीस वर्षों में दुनिया में कहीं भी किसी सर्वथा नवीन औषधि रसायन की खोज नहीं हुई है। इस दौरान इतना ही किया गया है कि कई औषधि रसायनों की संरचना में मामूली परिवर्तन करके उनके औषधिय गुण को बढ़ाया गया है। भारत में 1956 से 1995 के दरम्यान 40 वर्षों की अवधि में मात्र 14 औषधियों का विकास किया गया है। दरअसल विश्व में औषधि अनुसंधान की तुलना में भारत पिछड़ता जा रहा है।

विश्व स्तर पर अनुसंधान की स्थिति देखें तो पता चलता है कि आजकल औषधि को शरीर में पहुंचाने की विधियों पर बहुत शोध हो रहा है। शरीर में दवा को पहुंचाना यानी ड्रग डिलीवरी। ड्रग डिलीवरी की नई-नई टेक्नॉलॉजी के उपयोग से दवाइयों का प्रभाव कहीं ज़्यादा हो जाता है। कई ऐसी दवाइयां हैं जो वैसे तो बहुत असरदार हैं लेकिन उनकी एक्सपायरी तारीख (उपयोग कर सकने की अवधि) निकल गई है। यदि नवीन डिलीवरी विधि का उपयोग किया जाए तो इन दवाइयों को पुनः उपयोगी बनाया जा सकता है। इसके अलावा नवीन ड्रग डिलीवरी विधि के उपयोग से कारगर पेटेन्ट सुरक्षा भी बढ़ाई जा सकती है।

भारत के दवा उद्योग के सामने एक चुनौती और भी है। एक ओर तो कई दवाइयों की पेटेन्ट अवधि समाप्त हो जाएगी तथा दूसरी ओर भारत में उत्पाद (प्रॉडक्ट) पेटेन्ट प्रणाली वर्ष 2005 से लागू हो जाएगी। यह एक अहम मुद्दा है और भारत के दवा उद्योग को इस पर ध्यान देना होगा। अगले पन्द्रह वर्षों में 35 अरब डॉलर मूल्य की औषधियों की पेटेन्ट अवधि समाप्त हो जाएगी। इसका आमदनी पर व्यापक असर होगा। फायनेंशियल टाइम्स प्रबंधन रिपोर्ट के